कमजोर सोच का विसर्जन करें

समर्थ नारी गौरव

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कमजोर सोच का विसर्जन करें

डॉ॰ भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-11-0

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- डॉ० भारती वर्मा बौड़ाई 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR. BHARTI VERMA BOUDAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कमजोर सोच का विसर्जन करें

महिला दिवस आने वाला है। सुगबुगाहट चारों ओर सुनाई दे रही है। नित नई योजनाएँ, नित नए कार्यक्रमों की घोषणाएँ हो रही हैं, तैयारियाँ चल रही हैं। कोरोना के कारण लोग डरे हुए भी हैं और कार्यक्रमों के आगे खिसकने की सोच को लेकर भी चल रहे हैं। चाहे जो भी हो एक उत्सव का वातावरण तो निर्मित हो ही रहा है और होना भी चाहिए।

जब महिला दिवस आने को है तो महिला विमर्श तीव्र गति से सिर उठाने लगता है। इसे मनाने की आवश्यकता क्यों? मनाने से लाभ क्या है? एक दृष्टि से सोचा जाए तो बात सही लगती है और दूसरी दृष्टि से सोचा जाए तो ऐसा करने में गलत भी क्या है? छोटी-छोटी खुशियाँ जीने के लिए, अपनी भावनाओं को बताने के लिए, स्नेह से कुछ देने-लेने के लिए इस व्यस्त, भागदौड़ भरे जीवन में कोई दिन, कोई अवसर मिल मिलता है तो बुरा क्या है?

कोई भी समाज यदि पुरुष प्रधान है तो भी और महिला प्रधान है तो भी, एक दिन उसका पतन हो ही जाएगा। वही समाज आगे बढ़ेगा जो वास्तविक समानता पर आधारित होगा। तब परिवार स्वस्थ संस्थाओं का रूप लेंगे और उज्ज्वल व्यक्तियों के व्यक्ति समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए उपलब्ध होंगे।

दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ होने के समय तक भारतीय समाज का पतन हो चुका था। परिणाम स्वरूप एक हजार वर्ष तक भारतवासियों को तुर्कों, मुगलों और अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी, विकट संघर्ष करने पड़े और 1947 के बाद ही इस समाज ने फिर उठना शुरू किया। संघर्ष काल में महिलाओं की स्थिति और दयनीय हो गई। मध्यकालीन उत्तर भारत में पैर की जूती और स्त्री को एक समान माना जाने लगा। बुराइयों से और बुराइयाँ निकलीं। अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, यदि बारीकी से देखें तो महिलाओं को ही भुगतना पड़ा।

1500 साल की खामियाँ सत्तर साल में दूर नहीं हो सकती। आज भी समाज पुरुष प्रधान है। बहुत कम प्रतिशत पुत्री, महिला आदि के महत्व को समझ पाया है। यदि वैदिक युग के सम्मानित स्थान तक पहुँचाना है तो महिला दिवस तो मनाना ही होगा साथ ही बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे सैकड़ों कार्यक्रम चलाने होंगे ताकि जल्दी से जल्दी स्त्री के प्रति जो समाज का विकृत दृष्टिकोण है वह ठीक हो।

एक ओर हम शक्ति की पूजा करते हैं और दूसरी ओर शक्ति की प्रतीक नारी को हेय दृष्टि से देखते हैं, अवहेलना करने की भावना रखते हैं और करते भी हैं... ऐसा करना किसी भी दृष्टि से उचित हो ही नहीं सकता।

शक्ति की पूजा का प्रावधान संभवतः इसलिए हुआ कि उसका महत्व कभी भुलाया ना जा सके। ना कि वर्ष में एक बार पूजा कर दी गई और छुट्टी। वर्ष भर शक्ति का संचय होना चाहिए ध्यान, योग एवं व्यायाम से, शस्त्रों के रख-रखाव से, धनार्जन तथा जनाधार से और परिवार तथा समाज हित में इसका उपयोग भी होते रहना चाहिए।

शक्ति का प्रतीक नारी को माना गया है और उसी की अवहेलना अपने आप में एक विरोधाभास है जो हमारी शक्ति पूजा को पूजा नहीं मात्र एक कर्मकांड, ढकोसला और पाखंड के स्तर पर लाकर छोड़ देता है।

यदि शक्ति की वास्तविक पूजा करनी है तो पुरुषों द्वारा अर्जित शक्ति पूर्णतः नारी संरक्षण में व्यय हो और नारी द्वारा अर्जित शक्ति पुरुषों के संरक्षण में काम आये।

रक्षा का कार्य मात्र पुरुष का नहीं है नारी का भी है। परिवार और समाज की आंतरिक भावनाओं की रक्षा नारी तो बाह्य जगत की रक्षा पुरुष करते आये हैं। दोनों का दोनों आयामों में सहयोग भी हो तो और सशक्त परिवार, समाज, ग्राम और राष्ट्र बन सकता है। ऐसा ही हुआ था प्राचीन काल में और हम विश्व गुरु बने थे।

यदि वह पद पुनः पाना है तो अवहेलना, अपराध, दोयम दर्जा आदि घेरों से तो नारी को मुक्त होना ही होगा, साथ ही

शक्ति को दासी बना कर रखने की मानसिकता से भी उबरना होगा।

वर्ष में एक बार नहीं वर्ष भर शक्ति संग्रह नारी सशक्तिकरण के रूप में करना होगा। एक दिन तो साल भर के प्रयासों के परिणाम के आकलन का होता है।

हम किसी ऐसे समाज की कल्पना करें जिसमें केवल पुरुष ही हों या केवल स्त्रियाँ ही हों तो वह समाज नितांत असामान्य और विकृत समाज होगा जिसमें तमाम तरह की विसंगतियाँ होंगी। विसंगतियों से भरा समाज किसी को विकृत मानसिकता के अतिरिक्त क्या दे पाएगा। इसी लिए नारी और पुरुष मिल कर ही स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं। एक-दूसरे का सहयोग दोनों के लिए आवश्यक है। दोनों अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व के विकास के लिए एक-दूसरे का सम्मान करते हुए सहयोग करें.... यही स्वस्थ सोच है।पर ऐसा होता नहीं है।

अधिकतर नारी का कार्य क्षेत्र घर की चारदीवारी तक ही सीमित मान लिया जाता है, उसकी योग्यता, उसके हुनर को कोई महत्व नहीं दिया जाता। अच्छे-अच्छे परिवारों में ऐसा देखने को मिलता है। ऐसी सोच को घर की स्त्रियाँ ही पोषित करती हैं। जिसे स्वेटर बुनना, कढ़ाई करना आता है उसके अनुसार वही हुनर सर्वश्रेष्ठ है। उसके लिए बहू का पेंटिंग, फोटोग्राफी, घर को सजाना, नौकरी करना सब महत्वहीन है। स्त्री अपनी बेटी के हर

काम की प्रशंसा करती है, उसके कामों में सहायक बनती है, पर अपनी बहू के किसी काम की प्रशंसा करना तो दूर, नोटिस तक नहीं करती।

अपने आसपास के परिवेश में बहुत कुछ देखने को मिला है। सशक्त स्त्री भी देखी और कमजोर भी। दीक्षा के पति की मृत्यु हुई। घर के सम्बन्धियों और समाज के लोगों ने बहुत चाहा कि वह बेचारी बन कर घर की चारदीवारी में जिए, पर यहाँ उनके बच्चों ने उन्हें इस तरह प्रोत्साहित किया कि उन्होंने स्वयं को संभाला भी और अपनी इच्छाओं को, अपने अस्तित्व को मरने भी नहीं दिया। आज वे प्रेरणा स्रोत के रूप में देखी जाती हैं। दूसरी ओर श्रीलता ने घर की स्थितियों के अनुसार ही अपने को इस तरह ढाला कि अपने मन के निर्णय ले सकने की क्षमता विकसित करने में ही अपने जीवन के अठारह वर्ष बिता दिए जिसके लिए वह आज भी पछताती है।

इसी तरह मेरी ससुराल की ओर एक महिला सुभाषिणी को सत्संग में बहुत रूचि थी। पति के होते हुए भी जब जितना समय मिलता जाया करती थी। पति के न रहने पर सत्संग ने उनको दुख से उबरने में बहुत सहायता दी। वे घर, बच्चों और पति की जगह मिली नौकरी की सभी जिम्मदारियों को निभाते हुए अपने रविवारीय सत्संग में भी जाना जारी रखा। जब भी वे सत्संग जाने के लिए निकलती उनके आस-पड़ोस की महिलाओं

की वक्र दृष्टियाँ उनकी ओर उठ जाती। उनके जाने के बाद चरित्र पर लांछन, आलोचनाओं-प्रत्यालोचनाओं का दौर आरंभ हो जाता। पर वे भयभीत होने वालों में से नहीं थी। उन्होंने न किसी को अपनी सफाई दी और न ही अपना मार्ग बदला। आज वे अपने आस-पड़ोस की ही नहीं, दूर-दराज तक महिलाओं की रोल मॉडल हैं।

एक छोटी दुकान से हम सामान लिया करते थे। दुकानदार की पत्नी भी उसकी अनुपस्थिति में दुकान में आकर बैठती थी। दुकान बहुत अच्छी नहीं चलती थी पर दुकानदार के अच्छे व्यवहार के कारण हम उससे कुछ सामान ले लिया करते थे। एक बार देखा कि उसकी पत्नी ने बहुत अच्छा हाथ का बुना स्वेटर पहना है। पूछने पर पता चला कि उसने स्वयं बुना है। मैंने ऐसे ही पूछा कि यदि तुम्हें बुनाई के पैसे देकर कोई स्वेटर बुनवाना चाहे तो क्या तुम बुनोगी? वह बोली क्यों नहीं। आप मुझे काम दिलवाइए न! वो दिन है और आज का दिन..... वो अपने हुनर से स्वयं तो कमा ही रही है साथ ही उसने अपने जैसी महिलाओं को ढूँढ कर अपना एक समूह लिया है और वे सब मिल कर स्वेटर बुनती हैं, स्टॉल लगाती हैं। इससे मुझे यही समझ आया कि अवसर धीरे से सभी के पास दस्तक देते हैं जो सही समय पर उन्हें पकड़ कर काम करने के लिए कदम बढ़ा देते हैं उनके लिए यही अवसर उनका ही नहीं कईयों का भाग्य

चमका देते हैं पर मेरी एक परिचित भी बहुत अच्छे स्वेटर बनाती है। उसकी किसी सखी ने उसे ऑर्डर पर स्वेटर बनाने की सलाह दी तो दंभ में डूबी उस परिचिता ने अपनी सखी से कहा कि पैसों के लिए स्वेटर बनाने से मेरे पति तो मुझे मार ही डालेंगे। उनका हुनर घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गया है। घर के सामान्य कार्यों के पूर्ण होने के बाद उनका समय केवल और केवल बातों और सोने में बीतता है, जबकि अपनी इस योग्यता से वे काम, नाम और अर्थ तीनों पाकर आत्मनिर्भर बन सकती थी।

अपने आसपास की इन स्त्रियों की यहाँ अपने आलेख में चर्चा करने का मेरा विशेष उद्देश्य है। आज जो महिलाएँ सेलिब्रिटीज़ बन चुकी हैं उनके विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, लिखा जा रहा है। उनके विषय में सभी जानते हैं। जिन पर फिल्में बनी हैं वो भी देखी गई हैं। पर हर महिला के आसपास, परिचितों, सम्बन्धियों, मित्रों में कई ऐसी होंगी जिन्होंने संघर्ष कर अपना मार्ग प्रशस्त किया होगा या नहीं किया होगा... उनके विषय में हम सभी को अपने आलेखों, संस्मरणों में लिखना चाहिए ताकि साधारण स्त्री का असाधारण संघर्ष और विजय की गाथा पाठक वर्ग तक पहुँचे। स्त्री अभिमान और स्वाभिमान में अंतर करना सीखे, अपने सामने अवसर का उपयोग करके अपने हुनर को समाज के सामने ही नहीं लाए बल्कि उससे अर्थोपार्जन

कर वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर आत्मनिर्भर बने और अन्य महिलाओं को स्वावलंबी भी बनाए।

कभी-कभी हुनर भी स्त्री के पास होता है, योग्यता भी होती है पर वह सोशल नहीं होती अर्थात लोगों से मिलने-जुलने, सम्पर्क बनाने में संकोच करती है। वह अपनी इस कमी पर विजय प्राप्त करे, अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाए, अपने बच्चों से इंटर्नेट का ज्ञान प्राप्त कर अपनी रुचियों के लिए उसका उपयोग करना सीखे, पुस्तकें, समाचारपत्र पढ़े, ज्ञान का विस्तार करे, सोशल मीडिया का उपयोग करना सीखे, अपनी रुचियों को, अपने सपनों को अपने तक ही सीमित न रखे बल्कि उन्हें समाज के सामने लाने का प्रयास करे।

कभी-कभी अपनी रुचियों के कामों को करने में घरवालों का थोड़ा बहुत सहयोग तो मिल जाता है पर अपने उसी काम के चलते यदि अपने शहर से कहीं बाहर दूसरे किसी प्रांत में जाना पड़ता है तो वे साथ जाने में अपनी असमर्थता जता देते हैं। ऐसे में किसी स्त्री को निराशा का भाव तो लाना ही नहीं चाहिए बल्कि स्वयं यात्रा करने का साहस जुटा कर आगे कदम बढ़ाना चाहिए। अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के साहित्यिक कार्यक्रमों में मुझे कई सहयोगी रचनाकार मिली जिन्होंने भोपाल, वारासिवनी में हुए कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता करने के लिए अकेले यात्रा करने की और आत्मविश्वास से भरपूर हुई। वो

कहावत भी है कि “बिना मरे तो स्वर्ग भी नहीं मिलता।” अपनी मेहनत, लगन, से किए कामों की सफलता किसी स्वर्ग और अलौकिक आनंद से कम नहीं होगी।

एक और महत्वपूर्ण बात की चर्चा मैं यहाँ करना चाहती हूँ। कोई भी स्त्री/महिला इस सोच से बाहर निकले कि कोई उससे आगे न निकल न जाए, या यदि वह किसी का उसके काम में सहयोग/मार्गदर्शन करती है तो वह आगे-आगे निकल जाएगी और वह स्वयं पीछे रह जाएगी। हम अपने ही काम और मेहनत से आगे या पीछे रहते हैं। इस तरह की सोच रखने से अपना ही मार्ग अवरुद्ध होता है और अपनी प्रगति के मार्ग सदा के लिए बंद हो जाते हैं। उदार और स्वस्थ दृष्टिकोण अपना कर ही कोई स्वहित और परहित कर सकता है क्षेत्र चाहे कोई भी हो।

स्त्री ही स्त्री की शत्रु होती है, स्त्री ही स्त्री के विकास में बाधा होती है यह बात प्रायः सुनने को मिलती है, कुछ घटनाएँ भी देखने को मिलती हैं

संभवतः हमारी सामाजिक संरचना ही कुछ ऐसी है जिसमें हमें ऐसा अनुभव होता है कि महिला महिला की विरोधी होती है। आमतौर पर हमारा समाज पुरुष प्रधान है। महिलाओं पर घर संभालने का दायित्व रहता है। घर से बाहर निकल कर किसी भी कार्यक्षेत्र में उतरने वाली महिलाओं का प्रतिशत बहुत कम है। व्यापार, नौकरी, शिक्षा, राजनीति, साहित्य सृजन, सामाजिक

कार्य आदि क्षेत्रों में जो महिलाएँ यदि हैं भी तो हम कह सकते हैं इसकी बहुत धीमी शुरुआत आज से सौ वर्ष पहले ही हुई है, उसमें भी तेजी पिछले दो-तीन दशकों से ही देखने को मिल रही है।

घर से बाहर भागीदारी का अभाव महिलाओं के दायरे को बहुत छोटा कर देता है, सोच भी छोटी और संकुचित हो जाती है। पुरुष की प्रधानता के पोषण में ही लगी महिलाएँ प्रायः किसी महिला के ही रास्ते का रोड़ा बनती हैं। पुत्र के जन्म की इच्छा प्रायः महिलाओं में ही देखने को मिलती है क्योंकि समाज ही पुरुष प्रधान है। पुत्री की कामना आज भी कम ही करते देखे जाते हैं।

जो महिलाएँ किसी कार्य क्षेत्र में उतरती भी है तो पुरुषों की भीड़ में वे अलग ही दिखती हैं। अतः उनका व्यवहार, स्वाभाव स्वतः ही आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं। ऐसे में एक महिला को यदि किसी महिला से सहयोग की अपेक्षा होती भी है तो प्रायः वह भूल जाती है कि स्पर्धा की दौड़ में उसका मुकाबला पुरुषों के साथ-साथ सहकर्मी महिलाओं से भी है। सफलता पाने की दौड़ में पुरुष हो या महिला.. कोई भी किसी से असहयोग करके आगे निकल जाने का प्रयास कर सकता है। ऐसे में यदि महिला ने असहयोग कर दिया तो वह विकास में बाधा प्रतीत होती है।

एक कारण इस धारणा के बनने का यह भी हो सकता है कि जान-पहचान के पुरुष ने यदि सहयोग नहीं किया तो महिला इसकी चर्चा व्यापक स्तर पर नहीं कर पाती, क्योंकि समाज में से सीधा प्रश्न उठ सकता है तुमने जेठ, देवर, पति,पड़ोसी, सहकर्मी आदि से अधिक सहयोग की अपेक्षा की ही क्यों? जबकि ननद, सास, भाभी, जेठानी, पड़ोसों या सहकर्मी महिला ने यदि सहयोग नहीं किया तो इस असहयोग का ढिंढोरा पीटने में स्वयं पर उल्टा आरोप लगने का संदेह नहीं रहता है। यह परिस्थिति भी इस धारणा को पुष्ट करती सी लगती है कि महिला महिला के विकास में बाधक है।

ऐसे तो पुरुष भी पुरुषों के विकास में बाधक हो सकते हैं, सहकर्मी भी हो सकते हैं। अनेक महिलाएँ महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करती दिखाई देती हैं। हाँ, यदि महिला महिला से ही सहयोग की अपेक्षा रखेगी तो ऐसा और अधिक प्रतीत होगा। सहयोग महिला या पुरुष किसी से भी लिया जाये... सहयोग मिलना चाहिए।

मेरे विचार से समाज का पुरुष प्रधान एवं महिला का दोयम दर्जा ही इसका कारण है। जब वास्तव में हर दृष्टि से महिला और पुरुष समान होंगे तो यह धारणा बीते युग की बात बन जायेगी।

हमें इस धारणा को बदलना होगा। इसके लिए हर स्त्री को आत्मचिंतन/आत्ममंथन करना होगा, अपनी ईर्ष्या/राग/द्वेष की भावना को तिरोहित कर एक विशाल परिप्रेक्ष्य में सोचना होगा। दिखावे और आडम्बर की दुनिया से बाहर निकलना होगा। कुछ करना है, कुछ बनना है, स्वयं बन कर किसी को आगे बनाना/बढ़ाना है तो अपनी आवश्यकताओं में कुछ कटौती करनी होगी, कुछ धन भी बचाना होगा तभी तो उसका उपयोग अपने और दूसरों के लिए करने का अवसर मिलेगा और किसी के आगे हाथ भी फैलाना नहीं पड़ेगा। एक ही मंत्र हर स्त्री अपने जीवन का बना ले..... "स्वयं समर्थ बनूँगी और दूसरों को समर्थ बनाऊँगी"..... तो बदलाव की ऐसी बयार चलेगी कि एक क्रांति ही आ जाएगी। इतिहास साक्षी है जब भी किसी स्त्री ने कुछ करने का संकल्प किया तो एक इतिहास ही रच दिया।

चुनौतियाँ पहले भी थीं, आज भी हैं और आगे भी रहेंगी। स्त्री ने हर युग में परिस्थितियों से संघर्ष कर चुनौतियों का सामना कर अपने लिए राहें बनाईं और अपनी पहचान से जानी गईं। पहले की तुलना में समय, परिस्थितियाँ बदली हैं, सुविधाएँ भी हैं, शिक्षा है, घर और बाहर नए-नए काम करके अपनी पहचान बनाने के बहुत अवसर है। साथ ही घर-परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों को निर्वहन करने की चुनौतियाँ और संघर्ष भी है। आज की स्त्री बहुत अच्छी तरह से घर और बाहर दोनों मोर्चों

पर अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। इसके लिए वह अपने पर गर्व भी करती है और करना भी चाहिए।

पुरुष हो या स्त्री.... एक-दूसरे के सहयोग से ही आगे बढ़ते है इसमें कोई संदेह नहीं, फिर वह सहयोग माँ, बहन, पत्नी, मित्र, पिता, भाई, पति किसी से भी कम या अधिक जितना भी मिले, पर मिलता है.... इसे स्वीकार करना चाहिए।

समस्याएँ आती हैं, उनके समाधान भी होते हैं। कोई ऐसी समस्या नहीं जिसका समाधान न हो। सही समय पर सही निर्णय करना पहला कदम है। इसके लिए शिक्षित होना और वित्तीय स्वतंत्रता का होना बहुत आवश्यक है। आत्मनिर्भर होना अपनी स्वयं की पहचान बनाने, अपने सपनों को साकार करने की उड़ान भरने के लिए आवश्यक है। मैं कर सकती हूँ.... तब यह भाव स्वयं विकसित होगा और करने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करेगा। अपने स्त्री होने पर गर्व होना चाहिए। अपने को बेचारी और कमजोर समझने की कमजोर सोच का स्त्री को विसर्जन करना ही होगा। अपने लिए कोई नया कदम स्वयं ही उठाना पड़ता है, अपनी चुनौतियों से स्वयं जूझना, संघर्ष करना होता है तब विजय के सुख को अनुभव किया जा सकता है।स्वस्थ रहे, शिक्षित हो, वित्तीय स्वतंत्रता हो, आत्मनिर्भर हो...तो कोई भी स्त्री सशक्त, सक्षम बन कर अपने स्वयं के निर्णय लेकर आगे बढ़ेगी ही नहीं बल्कि औरों को अपने साथ-साथ आगे

बढ़ाएगी और समाज के सामने अपने को आदर्श के रूप में भी प्रस्तुत कर पाएगी।

हर स्त्री को हर पल यह बात मंत्र की तरह निरंतर स्मरण करनी होगी कि वह कमजोर नहीं हैं....वह सशक्त है और स्वयं को हर कार्य के अनुरूप सक्षम बनाना स्वयं उसकी जिम्मेदारी है।

कौन ऐसा काम है
जो कर सकती नहीं तुम
ठान लोगी जिस पल
स्वयं हटेंगी बाधाएँ
उद्यत हो मार्ग प्रशस्त करेंगी
ओ स्त्री! समय के शिलालेख पर
तुम कुछ नया अंकित करोगी।

डॉ० भारती वर्मा बौड़ाई

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
देहरादून (उत्तराखण्ड)

हाँ...मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ

चुनौतियाँ कल भी थीं
आज भी हैं, कल भी होंगी ,सदा रहेंगी
हर युग में/हर क्षेत्र में
नारी ने अपना परचम बखूबी लहराया है,
बदलते समय में स्त्री ने
प्रगति की परिभाषा बदली है
वह चुनौतियाँ गढ़ती और उन्हें पूर्ण करती है,
आत्मविश्वास से लबालब भरी हुई
मुक्त गगन में पंख खोल उड़ान भरती है
अपने अस्तित्व को एक नई पहचान देती है
तभी मुक्त मन से डंके की चोट पर कहती है
हाँ....मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-93-90995-11-0